मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50 वार्षिक ₹ 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद

वर्ष 18, अंक 1

NBT, INDIA

जनवरी 2013

अंदर के पृष्ठों में . . . . .

शारजाह अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला	2
आंबेडकर विश्वविद्यालय के साथ एनबीटी का समझौता-ज्ञापन	2
इस्तांबुल अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला	3
पोर्ट ब्लेयर में पठन-महोत्सव	3
भुवनेश्वर में जनजातीय बच्चों ने मनाया राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह	3
कोजीकोड पुस्तक मेला	4
असम में विज्ञान विषयक अनुवाद पर कार्यशाला	4
गाजियाबाद कार्यक्रम	5
ग्वालियर कार्यक्रम	5
सम्मान	5
राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह कार्यक्रम : इंदौर, मध्य प्रदेश, गुजराती साहित्य-कार्यक्रम असुरेश्वर, ओडिशा	6
रायचूर, कर्नाटक	7
कश्मीरी सलाहकार समिति की बैठक	7
तमिल सलाहकार समिति की बैठक	7
नववर्ष सद्भावना सम्मिलन	7
चिट्ठीघर	8
सेवानिवृत्ति	8

नवीनतम प्रकाशन

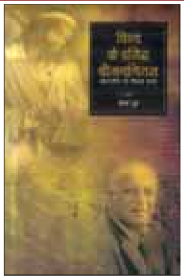

विश्व के प्रसिद्ध बीजगणितज्ञ

महेश दुबे

पृ. 180 ₹ 100

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला की दस्तक

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2013 ने दस्तक दे दी है। वसंत के आगमन की स्वागत वेला में **नई दिल्ली** का **प्रगति मैदान** पुस्तक, पुस्तकप्रेमी, लेखक और प्रकाशकों से भर उठेगा। उल्लेखनीय है कि मानव संसाधन विकास मंत्रालय के शीर्ष निकाय, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया का द्विवार्षिक आयोजन, नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला इस वर्ष से वार्षिक आयोजन हो गया है। **4 से 10 फरवरी, 2013** की अवधि में आयोजित होने वाले इस पुस्तक मेले के सह-आयोजक हैं 'भारत व्यापार प्रोन्नयन संगठन' (इंडिया ट्रेड प्रमोशन ऑर्गेनाइजेशन–ITPO)।

विदित हो कि एशिया और अफ्रीका के पुस्तक मेलों में नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला की अपनी विशेष प्रतिष्ठा है और इसकी गिनती क्षेत्र के विशालतम पुस्तक मेलों में होती है। 1972 से प्रारंभ नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले की इस कड़ी में लगभग 25 देश एवं 1100 प्रकाशकों के लगभग 1900 स्टॉल लगेंगे। 4 फरवरी को पुस्तक मेला का उद्घाटन माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ. एम.एम. पल्लम राजू करेंगे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि होंगे भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR) के अध्यक्ष श्री कर्ण सिंह।

पुस्तक मेले के दौरान बड़ी संख्या में पुस्तक एवं साहित्य से जुड़ी गतिविधियों के आयोजन होंगे। इसके अंतर्गत संगोष्ठियाँ, प्रदर्शनियाँ एवं सांस्कृतिक प्रस्तुतियों समेत अनेक अन्य आयोजन भी होंगे। मेले के आयोजक नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा मेला स्थल पर थीम पैवेलियन, बाल पैवेलियन, युवा पैवेलियन सहित अनेक पैवेलियन (मंडपों) का निर्माण किया जाएगा। विदित हो कि इस बार पुस्तक मेले का थीम भारत के लोक एवं जनजातीय साहित्य पर **देशज अभिव्यक्तियाँ : भारतीय परिकल्पना में लोक एवं जनजातीय साहित्य** है। इस थीम प्रस्तुति के अंतर्गत हमारे परंपरागत मूल संस्कृति की वैविध्यपूर्ण अभिव्यक्तियों, जिसमें पुस्तकों, परंपरागत कला रूपों, शिल्पकलाओं, पैनल विमर्शों एवं अभिनयों, का प्रदर्शन शामिल हैं। लेकिन प्रस्तुति का मुख्य आकर्षण हिंदी, अँग्रेजी सहित सभी भारतीय भाषाओं की पुस्तकों की एक विशिष्ट प्रदर्शनी होगी। थीम कार्यक्रम के लिए जिस 'लोगो' को अपनाया गया है वह पश्चिम भारत के एक स्वदेशी समुदाय, वर्ली, की महिलाओं द्वारा परंपरागत रूप से बनाई जाने वाली एक मौलिक जनजातीय कला रूप है जिसे वर्ली कला कहते हैं।

पुस्तक कला प्रदर्शनी इस पुस्तक मेले का एक विशिष्ट आकर्षण होगी। बाल मंडप में नेशनल बुक ट्रस्ट के अनुभाग, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र द्वारा प्रतिदिन बच्चों के लिए बालोपयोगी साहित्यिक-सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ होंगी। युवा मंडप में युवाओं के लिए अनेक कार्यक्रम होंगे। इस मंडप में राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त अनेक प्रख्यात हस्ती आएँगे तथा युवाओं से संवाद करेंगे। पुस्तक मेला की पूरी अवधि में मेला परिसर में अनेक सांस्कृतिक आयोजन होंगे जिनमें नृत्य, संगीत आदि शामिल हैं।

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 4–10 फरवरी प्रगति मैदान 2013

प्रगति मैदान के चप्पे-चप्पे से एक ही आवाज आती है चलो पुस्तक मेला कि पुस्तकें हमें बुलाती हैं!

इस पुस्तक मेले में फ्रांस को अतिथि देश का सम्मान दिया गया है। इस अवसर पर फ्रांस अपने बृहत प्रकाशन उद्योग तथा फ्रांसीसी लेखन को अपने प्रकाशकों के माध्यम से बड़े पैमाने पर प्रदर्शित करेगा। इसके अलावा, अनेक फ्रांसीसी लेखक एवं विद्वान पुस्तक मेले में चर्चा, संवाद एवं संगोष्ठियों में भाग लेंगे। फ्रांस की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक झलक भी देखने को मिलेगी।

पुस्तक मेले के शुरू होने से पहले, 2-3 फरवरी, 2013 की अवधि में एनबीटी पहली बार एक दो-दिवसीय नई दिल्ली राइट्स टेबल (स्वत्वाधिकार मंच) का आयोजन करेगा। इस कार्यक्रम में व्यवसायी से व्यवसायी वार्तालाप के लिए भारत और अन्य देशों के प्रकाशन व्यवसायी एवं राइट्स प्रतिनिधि एक साथ एकत्र होंगे।

पुस्तक मेला में आने वाले सैकड़ों लेखकों

चलो पुस्तक मेला, किताबों की सतरंगी दुनिया में खो जाने के लिए

के लिए एक 'लेखक कोना' का निर्माण किया जा रहा है जहाँ पाठक अपने प्रिय लेखक से मिल-बैठकर संवाद कर सकेंगे। मेले की दैनंदिन घटनाओं की जानकारी देने के उद्देश्य से ट्रस्ट हिंदी एवं अँग्रेजी में प्रतिदिन बुलेटिन का प्रकाशन करेगा। प्रकाशक एवं उनके हॉल/स्टॉल/स्टैंड आदि की जानकारी से युक्त फेयर डायरेक्टरी का भी हर बार की तरह इस बार भी प्रकाशन किया जाएगा, जिसे किफायती कीमत पर पाठक/पुस्तकप्रेमी खरीद सकेंगे।

पुस्तक मेले में नेशनल बुक ट्रस्ट हिंदी एवं अँग्रेजी समेत लगभग 22 भाषाओं में अपनी पुस्तकों के साथ विभिन्न हॉलों में उपस्थित रहेगा। हिंदी, अँग्रेजी एवं क्षेत्रीय भाषाओं की पुस्तकें अपने-अपने निर्धारित हॉलों में लगे स्टॉलों में बिक्री के लिए उपलब्ध होंगी। विदित हो कि ट्रस्ट विभिन्न भाषाओं में अनेक विषयों की पुस्तकें प्रकाशित करता है। ट्रस्ट की बाल पुस्तकों की भी अपनी विशिष्ट पहचान है।

शारजाह अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला

मध्य-पूर्व के देश संयुक्त अरब अमीरात में लगने वाला शारजाह अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला इस क्षेत्र में लगने वाला एक महत्वपूर्ण पुस्तक मेला बन गया है। इस पुस्तक मेले का आयोजन 7 से 17 नवंबर, 2012 की अवधि में शारजाह के एक्सपो सेंटर में हुआ, जिसका उद्घाटन शारजाह के शासक महामहिम डॉ. शेख सुल्तान बिन मोहम्मद अल कासिम ने किया। उद्घाटन समारोह में संस्कृति मंत्री, अनेक अरब देशों के राजदूत, बुद्धिजीवी एवं पुस्तकप्रेमियों समेत बड़ी संख्या में मीडियाकर्मी उपस्थित थे। पुस्तक मेला में 62 देशों के 900 से अधिक प्रकाशकों ने भाग लिया। मेले में अनेक साहित्यिक कार्यक्रम, व्याख्यान, सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ, कला पर कार्यशालाएँ, कथावाचन सत्र एवं बच्चों के लिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन उल्लेखनीय आकर्षण रहे।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया ने विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी इस उभरते हुए पुस्तक मेले में भाग लिया। इस पुस्तक मेले में ट्रस्ट ने पहली बार अपनी 7 पुस्तकों तथा 4 अन्य प्रकाशकों की पुस्तकों के कॉपीराइट बेचे, जो अपने आप में एक उपलब्धि है।

5 व 6 नवंबर को आयोजित दो दिवसीय प्रतिलिप्यधिकार मंच (राइट्स टेबल) में विश्व भर से आए 100 से अधिक प्रकाशकों को चुनिंदा बेहतरीन कृतियों की तलाश एवं भाषा प्रतिलिप्यधिकार में व्यापार के अवसर मिले। एनबीटी ने भारत में हाल में प्रकाशित 200 से अधिक पुस्तकों के साथ राइट्स टेबल में भाग लिया था। ट्रस्ट की संयुक्त निदेशक श्रीमती फरीदा एम नाईक ने इसे 'एक बड़ी सफलता' कहा। उन्होंने कहा कि प्रकाशक भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के समकालीन लेखन के प्रति काफी उत्सुक दिखे।

ट्रस्ट-अध्यक्ष श्री ए. सेतुमाधवन ने साक्षात्कार सत्र में कहा कि "एनबीटी ने भारतीय पुस्तकों के विदेश में प्रोन्नयन के अपने प्रयास के तहत भारतीय पुस्तकों के विदेशी भाषाओं में अनुवाद के लिए एक वित्तीय सहायता कार्यक्रम की शुरुआत की है। यह कार्यक्रम विदेशी प्रकाशकों के लिए भारतीय लेखन की दिलचस्प दुनिया की खोज में प्रोत्साहक बनेगा।"

इस बार के पुस्तक मेले की एक खास बात यह रही कि अरेबियन एवं विदेशी भागीदारों के लिए मेले के क्षेत्रफल में बढ़ोतरी की गई। यह भी महत्वपूर्ण रहा कि भारतीय प्रकाशकों की भागीदारी इस बार पाँच सौ प्रतिशत तक बढ़ी। मेले में 52 स्कूलों के लगभग 5,000 विद्यार्थी आए, जो बड़ी बात रही। पुस्तक मेले के दौरान एक कार्यक्रम में अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त भारतीय लेखिका अरुंधती राय ने पुस्तकप्रेमियों से अपने लेखकीय जीवन के बारे में बातें साझा की।

पुस्तक मेले में भारतीय भागीदारी में 'कैपेक्सिल' तथा नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया (एनबीटी) मुख्य रहे। एनबीटी की ओर से उप-निदेशक (उत्तर क्षेत्र) श्री इमरानुल हक तथा सहायक निदेशक श्री अनिल खन्ना भी पुस्तक मेले में सहभागी रहे।

आंबेडकर विश्वविद्यालय के साथ एनबीटी का समझौता-ज्ञापन

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया और आंबेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली के बीच एक समझौता-ज्ञापन हुआ है। इस समझौता-ज्ञापन के अनुसार आंबेडकर विश्वविद्यालय एनबीटी के सहयोग से पुस्तक प्रकाशन में सर्टिफिकेट, डिग्री एवं पोस्ट ग्रैजुएट स्तर पर पाठ्यक्रम का आयोजन करेगा।

इस समझौता-ज्ञापन पर आंबेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली की रजिस्ट्रार सुश्री सुमति कुमार तथा एनबीटी-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर के बीच कश्मीरी गेट स्थित विश्वविद्यालय के कैम्पस में हस्ताक्षर किए गए। इस अवसर पर प्रो. श्याम बी. मेनन, कुलपति, आंबेडकर विश्वविद्यालय तथा ट्रस्ट-अध्यक्ष श्री ए. सेतुमाधवन भी उपस्थित थे।

इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के अंतर्गत पुस्तक प्रकाशन के अनेक पहलू, यथा—संपादन, प्रतिलिप्यधिकार, पुस्तक-निर्यात, अनुवाद-तकनीक, उत्पादन आदि शामिल होंगे। इस पाठ्यक्रम के अगले अकादेमिक सत्र से शुरुआत होने की संभावना है।

श्री सेतुमाधवन ने कहा कि यह पाठ्यक्रम प्रकाशन उद्योग के लिए व्यावसायिक मानव शक्ति की बढ़ती माँग को पूरा करेगा। यह प्रकाशन क्षेत्र में करियर की तलाश में आने वाले छात्रों के लिए भी लाभदायक होगा।

उल्लेखनीय है कि एनबीटी पुस्तक प्रकाशन में डिप्लोमा कोर्स के लिए कलकत्ता विश्वविद्यालय के साथ पहले ही एक समझौता-ज्ञापन कर चुका है। ट्रस्ट देश के कुछ अन्य विश्वविद्यालयों के साथ भी इसी तरह का समझौता करेगा।

इस्तांबुल अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया ने पहली बार तुर्की के इस्तांबुल अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले में भाग लिया। यह मेला 17 से 20 नवंबर, 2012 तक प्रसिद्ध टी.यू.वाई.ए.पी. फेयर तथा कनवेंशन सेंटर, बेलीडुजु में आयोजित किया गया था। भारत के अलावा, इस मेले में ब्रिटेन, ग्रीस, हंगरी, जर्मनी, रूस, चीन, सऊदी अरब जैसे कई अन्य देशों ने भाग लिया। नीदरलैंड इस मेले में विशिष्ट अतिथि देश था।

एनबीटी, इंडिया ने भारतीय प्रकाशन उद्योग के प्रतिनिधि के रूप में 200 से अधिक पुस्तकों का प्रदर्शन किया, जिनमें शामिल थीं—कथा व कथेतर साहित्य, बच्चों की पुस्तकें, जीवनियाँ, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी, भाषा एवं संदर्भ और सामान्य पुस्तकें। तुर्की के लोगों तथा प्रकाशकों ने गाँधी, टैगोर, योग, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा बच्चों की पुस्तकों के प्रति विशेष रुचि दिखाई। इन पुस्तकों की बृहत स्तर पर माँग भी देखी गई।

एनबीटी के अध्यक्ष तथा मलयालम भाषा के प्रख्यात लेखक, श्री ए. सेतुमाधवन ने इस मेले में भाग लेने वाले प्रकाशकों के साथ हुई बैठक में कहा, ''भारत तथा तुर्की के प्रकाशकों के पास बढ़ते बाजार का लाभ उठाने हेतु बहुत बड़ा अवसर है, क्योंकि दोनों देशों का अपना एक समृद्ध सांस्कृतिक इतिहास है।'' इस बार प्रकाशकों का मेले के प्रति उत्साह और अच्छी प्रतिक्रिया को देखते हुए उन्होंने यह भी कहा कि अगले वर्ष मेले में और अधिक भारतीय प्रकाशक तुर्की आएँगे।

एनबीटी-अध्यक्ष ने तुर्की के प्रकाशकों से भी मुलाकात की तथा उन्हें ट्रस्ट के वित्तीय सहायता कार्यक्रम की जानकारी दी, जिसे एनबीटी द्वारा उन विदेशी प्रकाशकों के लाभ हेतु आरंभ किया गया है, जो अपनी भाषा में भारतीय कृतियों के अनुवाद के लिए उत्सुक हैं। इन्होंने इस्तांबुल पुस्तक मेले के निदेशक श्री केहन ओमेरोग्लू के साथ एक बैठक भी आयोजित की, जिसमें 2014 या 2015 के इस्तांबुल पुस्तक मेले में भारत के विशिष्ट अतिथि होने के बारे में चर्चा की गई। एनबीटी ने अन्य देशों के प्रतिनिधियों के साथ बैठकों की एक शृंखला आयोजित की तथा आगामी नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2013 के बारे में जानकारी दी गई।

31वें इस्तांबुल पुस्तक मेले में 40 देशों तथा 25 विदेशी लेखकों सहित 620 प्रकाशकों एवं गैर सरकारी संगठनों ने भाग लिया। नौ दिनों के दौरान लगभग 250 साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। साथ ही पठन-सत्रों व अन्य गतिविधियों के फलस्वरूप सैकड़ों लेखकों तथा उनके पाठकों को एक मंच पर आने तथा आपसी संवाद का अवसर प्राप्त हुआ।

मेले के मुख्य आकर्षणों में शामिल थे—एक विशिष्ट लेखक फोटोग्राफी प्रदर्शनी, 'गुलटेन देओग्लू : अ लाइफ इन राइटिंग', जिसमें लेखक के जीवन की एक झलक दर्शाई गई थी; 'लक्की ल्यूक इन इस्तांबुल'—एक प्रदर्शनी, जो हास्य-उद्योग के विकास तथा रेखाचित्रों व चरित्र-विकास के माध्यम से लक्की ल्यूक की रंगीन दुनिया पर दृष्टि डालती है; 'ऐन एलिफैंट केम बाय' : डच बच्चों की पुस्तकों के चित्र, 24 चित्रकारों की कृतियों का एक संकलन; 'फॉरेस्ट ऑफ कवर्स'—बाल एवं युवा पुस्तक-आवरण प्रदर्शनी, बच्चों एवं युवाओं के पुस्तक-आवरणों का प्रदर्शन करने वाली एक प्रदर्शनी; तथा 'बुक इलस्ट्रेशंस इन टर्की' पर एक प्रदर्शनी, जो तुर्की के अग्रणी चित्रकारों का चुनिंदा संग्रह था।

मेले का थीम 'माई चाइल्डहुड इज़ माई होमलैंड' तथा विशिष्ट लेखक गुलटेन देओग्लू थे। यह पुस्तक मेला टी.यू.वाई.ए.पी. के द्वारा आर्टिस्ट 2012/22वें अंतरराष्ट्रीय इस्तांबुल कला मेले के साथ-साथ आयोजित किया गया था। एनबीटी के सहायक निदेशक, कुमार समरेश ने मेले में एनबीटी का प्रतिनिधित्व किया।

पोर्ट ब्लेयर में पठन-महोत्सव

राष्ट्रीय स्तर पर संपन्न राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह समारोह के एक भाग के रूप में पोर्ट ब्लेयर के स्टेट लाइब्रेरी में 16-17 नवंबर, 2012 को दो दिवसीय पठन-महोत्सव का आयोजन किया गया। नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा आयोजित इस महोत्सव का उद्‌घाटन शिक्षा विभाग के निदेशक डॉ. आर. देव दास ने किया। इस अवसर पर प्रख्यात तेलुगू लेखक तथा बाल साहित्य के लिए साहित्य अकादेमी विजेता डॉ. भूपाल रेड्डी मुख्य अतिथि थे।

महोत्सव के पहले दिन, 16 नवंबर को नेशनल बुक ट्रस्ट के अनुभाग, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र द्वारा समन्वित, देश में सबसे बड़ा बाल पठन प्रोन्नयन कार्यक्रम, पाठन मंच अभियान, का अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह में प्रवर्तन किया गया और 400 स्कूलों एवं बाल पुस्तकालयों को सदस्य के रूप में नामांकित किया गया। इस अवसर पर 70 से अधिक शिक्षकों, प्राचार्यों, शिक्षक-प्रशिक्षक, पुस्तकालयाध्यक्ष और सामाजिक कार्यकर्ताओं को पाठन मंच चलाने के तरीके बताए गए।

17 नवंबर को हुए दूसरे दिन के कार्यक्रम में लेखक डॉ. भूपाल रेड्डी के साथ तीन संवाद सत्र आयोजित हुए। ये सत्र गवर्नमेंट सीनियर सेकंडरी स्कूल (तेलुगू माध्यम), जवाहरलाल नेहरू गवर्नमेंट कॉलेज एवं स्टेट लाइब्रेरी में आयोजित किए गए। प्रथम दो सत्रों में बच्चों, युवाओं तथा स्कूल एवं कॉलेज शिक्षकों ने लेखक से उनकी कृतियों के अंश का पाठ सुना। इसके अलावा, द्वीप एवं मुख्य भूमि के लेखकों के बीच नियमित साहित्यिक-सांस्कृतिक विनिमय की जरूरत पर भी बल दिया गया। भागीदारों ने देश के विभिन्न भागों में पुस्तक एवं पुस्तकोन्नयन गतिविधियों के द्वारा एक पुल बनाने के एनबीटी के सतत प्रयासों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

इस अवसर पर 14 से 20 नवंबर की अवधि में स्टेट लाइब्रेरी में ट्रस्ट के पूर्वी क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा ट्रस्ट के पुस्तकों की एक सप्ताह लंबी प्रदर्शनी-सह-विक्रय का आयोजन भी किया गया।

भुवनेश्वर में जनजातीय बच्चों ने मनाया राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह

भुवनेश्वर, ओडिशा के कलिंग इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज, के.आई.आई.टी. यूनिवर्सिटी का एक अंगीभूत घटक, में 14 नवंबर, 2012 को कुछ अलग ही नजारा देखने को मिला। 15,000 से अधिक जनजातीय बच्चे वहाँ नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह (14 से 20 नवंबर) के अवसर पर उपस्थित थे और 'आनंद के लिए पठन' की शपथ ली। यह शपथ ट्रस्ट के अनुभाग, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र के संपादक श्री मानस रंजन महापात्र ने दिलवाई।

इस अवसर पर हुए संवाद सत्र में प्रख्यात बाल साहित्यकारों, डॉ. शशांक चूड़ामणि, श्री मानस रंजन सामल, श्रीमती शैलबाला महापात्र, श्रीमती सविता दास, डॉ. रश्मिता त्रिपाठी और डॉ. निवेदिता महांति ने भाग लिया। इस अवसर पर लेखकों एवं कुछ भागीदार बच्चों ने कविता एवं कहानियाँ सुनाईं।

कोजीकोड पुस्तक मेला

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया ने कोजीकोड सिटी कॉरपोरेशन के सहयोग से 3 दिसंबर, 2012 को नौ दिवसीय कोजीकोड पुस्तक मेले का आयोजन किया। मेले के उद्घाटन-अवसर पर ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता, श्री एम. टी. बासुदेवन ने कहा, ''पुस्तकों एवं साहित्य के अंत के बारे में पहली बार चिंता, 1962 में शिकागो में हुए एक सम्मेलन में दर्शाई गई। उस सम्मेलन में अपने समय के सबसे प्रसिद्ध लेखकों में से कुछ ने भाग लिया था। इन दिनों जिस प्रकार नवीनतम प्रौद्योगिकीय विकास को भय की दृष्टि से देखा जा रहा है, उसी तरह टेलीविजन के आविष्कार से भी चिंता फैल गई थी। लेकिन पुस्तकें इन सबका सामना करते हुए खम ठोंककर खड़ी हैं एवं पठन-आदत में कोई कमी नहीं आई है। साथ ही, ये ई-पुस्तकों व ऑडियो पुस्तकों जैसे विभिन्न माध्यमों द्वारा खुद को लगातार पुनः आविष्कृत कर रहे हैं।''

एनबीटी के अध्यक्ष व प्रख्यात लेखक श्री ए. सेतुमाधवन ने कहा, ''नेशनल बुक ट्रस्ट भारतीय लेखकों की कृतियों का विदेशी भाषाओं में अनुवाद हेतु एक आरंभिक परियोजना पर कार्य कर रहा है। भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद क्षेत्रीय लेखकों को व्यापक दृश्यता प्रदान कर रहा है।''

कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि एवं प्रसिद्ध तेलुगू लेखिका श्रीमती वोल्गा ने कहा कि मलयालम रचनाओं के अनुवाद ने उन्हें केरल तथा आंध्रप्रदेश की संस्कृतियों के बीच समानताओं को समझने में सक्षम बनाया है। इस अवसर पर कोजीकोड मेयर प्रो. ए.के. प्रेमाजन, विधायक श्री पुरुषन काडालुंडी तथा जिला कलेक्टर श्री के.वी. मोहन कुमार, आई.ए.एस. ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। इस अवसर पर श्री मोहम्मद अब्दुर्रहमान की जीवनी के हिंदी अनुवाद का लोकार्पण भी किया गया।

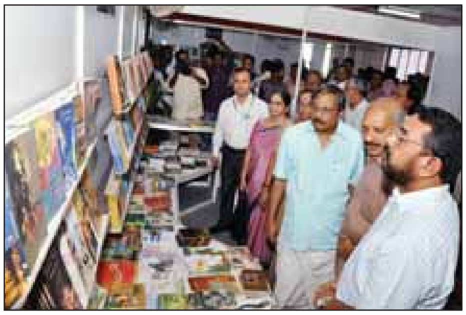

श्री ए. सेतुमाधवन द्वारा प्रकाशकों तथा नई पीढ़ी के लेखकों के लिए 'ई-बुक्स एंड ऑनलाइन मार्केटिंग' पर आयोजित कार्यशाला का उद्घाटन किया गया। यह कार्यशाला पुस्तक मेले का एक विशेष आकर्षण थी। इस कार्यशाला को संबोधित करते हुए स्वतंत्र प्रकाशन सलाहकार, सुश्री विनुथा माल्या ने कहा, ''अगले पाँच वर्षों में ई-बुक्स भारत में अगली बड़ी उपलब्धि होने वाली है इसलिए यह बेहतर होगा कि प्रकाशक स्वयं को इस नए विकास के अनुरूप बना लें।''

मेले में महिलाओं के लेखन पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता मलयालम लेखिका सुश्री के. अजिता ने की। इस संगोष्ठी में सुश्री वोल्गा, सुश्री ममता सागर तथा सुश्री मिनी सुकुमार ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

कालीकट विश्वविद्यालय के अँग्रेजी विभाग के सहयोग से 'पॉलिटिक्स ऑफ ट्रांसलेशन' विषय पर एक अन्य दो दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की गई, जिसका केरल के सामाजिक कल्याण तथा पंचायत मंत्री, डॉ. एम. के. मुनीर द्वारा उद्घाटन किया गया। संगोष्ठी में श्री निर्मलकांति भट्टाचार्जी ने मुख्य व्याख्यान प्रस्तुत किया।

मेले की एक अन्य प्रमुख विशेषता थी—एक प्रख्यात मलयालम कथा लेखक द्वारा दैनिक व्याख्यान। इस व्याख्यान श्रृंखला का उद्घाटन श्री ए. सेतुमाधवन ने किया। इस अवसर पर पुनाथिल कुंजाब्दुल्ला, सारा जोसेफ, यू.ए. खादेर, सी. राधाकृष्णन तथा एम. मुकुंदन ने व्याख्यान दिए। यह मेला देशभर से आए 38 प्रकाशकों को 57 स्टॉलों पर प्रदर्शन हेतु विविध पुस्तकों सहित एक साथ मंच पर लाया।

एनबीटी के मलयालम संपादक श्री रूबिन डिक्रूज ने इस पुस्तक मेले का समन्वय किया।

असम में विज्ञान विषयक अनुवाद पर कार्यशाला

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया ने असम साईंस राइटर्स एसोसिएशन के साथ संयुक्त रूप से उत्तर लखीमपुर, असम में 9 से 11 नवंबर, 2012 तक 'विज्ञान का प्रचार-प्रसार : विज्ञान विषयक अनुवाद पर कार्यशाला' नाम से एक कार्यशाला का आयोजन किया। आयोजन होटल मैपल लीफ, लखीमपुर में हुआ।

कार्यशाला में पूरे असम से उभरते हुए लगभग 40 विज्ञान लेखक आए। उद्घाटन लखीमपुर जिला उपायुक्त एवं उत्तर-पूर्व के प्रख्यात पक्षिविज्ञानी डॉ. अनवरउद्दीन चौधरी, आईएएस ने किया। पूरे विश्व में अनेक अंतरराष्ट्रीय विज्ञान परिसंवादों में भाग लेने के अपने अनुभव साझा करते हुए उन्होंने कहा कि विज्ञान विधा में अँग्रेजी भाषा के वर्चस्व को लेकर हमें विलाप नहीं करना चाहिए, बल्कि हम यह सुनिश्चित करें कि विज्ञान साहित्य को क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद कराके उसे सहज सुलभ कराएँ। उन्होंने विज्ञान विषय पर एक अधिकारी और एक लेखक के लिखने पर अंतर बताते हुए एनबीटी समेत विज्ञान विषयक प्रकाशनों से लेखकों के चयन में अत्यधिक सावधान रहने की अपील की।

इससे पहले, दो स्रोत व्यक्ति एवं भागीदारों का स्वागत करते हुए ऑल इंडिया साईंस टीचर्स एसोसिएशन के पूर्व महासचिव डॉ. अमिय राजबोंगशी ने असमिया में लोकप्रिय विज्ञान को समृद्ध करने एवं आम लोगों, विशेषकर युवाओं, में वैज्ञानिक चेतना को बढ़ावा देने में असम साईंस राइटर्स एसोसिएशन द्वारा की गई पहल का संक्षिप्त विवरण दिया।

असमिया रेडियो विज्ञान एकांकी के अग्रगण्य, प्रतिष्ठित विज्ञान कथा लेखक, सुपरिचित कोशकार, अनुवादक और संपादक डॉ. दिनेश चंद्र गोस्वामी तथा असम साईंस सोसायटी के पूर्व अध्यक्ष एवं असमिया में विज्ञान बृहत कोश के सह संपादक प्रो. क्षीरधर बरुआ कार्यशाला में स्रोत व्यक्ति के तौर पर थे।

कार्यशाला में विज्ञान-अनुवाद की तकनीकी सूक्ष्मताओं पर विस्तार से चर्चा की गई। कार्यशाला में वैज्ञानिक शब्दावली, विषयवस्तु की महत्ता एवं असमिया भाषा में वाक्य-विन्यास के असमिया में समानार्थी शब्दों पर महत्वपूर्ण चर्चा हुई।

गाजियाबाद कार्यक्रम

हिंदी के उत्थान में गैर-हिंदीभाषियों का योगदान अतुलनीय—ज्ञानेन्द्र पांडे

''हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के प्रगाढ़ अंतर्संबंध सदियों पुराने रहे हैं। हिंदी के विकास में उन लोगों का योगदान अविस्मरणीय रहा है जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं रही है। गाँधी जी ने दक्षिण में हिंदी के प्रचार को स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ा। ज्ञानी जैल सिंह के गृह मंत्री रहते हुए भारत के संविधान के हिंदी संस्करण को मान्यता मिली थी।'' यह विचार थे प्रख्यात पत्रकार व 'लोकसभा टेलीविजन' के संपादक ज्ञानेन्द्र पांडे के। वे गाजियाबाद के 'हिंदी भवन' में संपन्न 20वें अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन के दौरान नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा 28 अक्तूबर, 2012 को आयोजित विचार-गोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे थे। गोष्ठी का विषय था—*हिंदी और भारतीय भाषाएं : अंतर्संबंध और विकास की संभावनाएँ।*

गोष्ठी के पहले वक्ता फगवाड़ा, पंजाब से आए डॉ. रमेश सोबती ने पंजाबी भाषा के इतिहास और उसके आदि का हिंदी से संबंधों पर चर्चा करते हुए बताया कि संत, सिपाही और साहित्यकार गुरु गोविंद सिंह जी महाराज ने उस काल में कई रचनाएँ हिंदी में की थीं। उन्होंने चंद्रधर शर्मा गुलेरी की रचना 'उसने कहा था', कृष्णा सोबती की 'मित्रो मरजाणी' से लेकर भीष्म साहनी व अमृता प्रीमत तक के रचना संसार का उल्लेख कर

बताया कि किस तरह इनकी हिंदी रचनाओं में पंजाब का लोकरंग जीवंत होता रहा है। अहमद नगर, महाराष्ट्र के कला व विज्ञान महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शहाबुद्दीन नियाज मुहम्मद शेख ने बताया कि किस तरह मराठी और हिंदी एक ही परिवार की भाषाएँ हैं। उन्होंने बताया कि लिपि, सांस्कृतिक परंपरा, व्याकरण, समान स्वर-ध्वनि व्यवस्था, समान वाक्य रचना और विराम चिह्न होने के कारण दोनों भाषाएँ एक-दूसरे के बेहद करीब हैं। डॉ. प्रदीप दीक्षित, कानपुर ने भाषाओं के अंतर्संबंध के लिए अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका को याद करते हुए बताया कि जेनुल आबदीन और अकबर ने बाकायदा अपने शासन में अनुवाद के अलग से महकमे बनाए थे। तेलुगू के प्रख्यात अनुवादक डॉ. जे. लक्ष्मी रेड्डी ने बताया कि किस तरह आंध्रप्रदेश में हिंदी के शिक्षण ने साक्षरता का प्रसार किया। उन्होंने बताया कि वर्तमान में उनके राज्य में हिंदी को स्कूल से लेकर उच्च शिक्षा के स्तर तक खूब पढ़ाया जा रहा है। मुरैना, मध्यप्रदेश से आए डॉ. रामप्रबल श्रीवास्तव 'प्रबल' ने हिंदी के देशव्यापी स्वरूप में पर्यटन, तीर्थाटन की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी एक सामर्थ्यवान भाषा है। कार्यक्रम का संचालन नेशनल बुक ट्रस्ट में हिंदी संपादक श्री पंकज चतुर्वेदी ने किया। औपचारिक उद्बोधन के पश्चात श्रोताओं ने भी विमर्श किया।

इस आयोजन के दूसरे सत्र में नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा प्रकाशित दो पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। ये पुस्तकें थीं—*नैने-वूवू* (इंडोनेशिया की लोककथाएं), लेखिका : प्रीता व्यास और *मास्टरदा सूर्यसेन,* लेखिका : श्रीमती प्रवीण शर्मा। इन पुस्तकों का लोकार्पण पूर्व राज्यपाल व केंद्रीय मंत्री श्री भीष्मनारायण सिंह, पूर्व सांसद, शिक्षाविद् व साहित्यकार डॉ. रत्नाकर पांडे, मेरठ विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. आर.बी.एल. गोस्वामी और लेखक व प्रशासनिक अधिकारी श्री राजकुमार सचान 'होरी' ने किया। इस अवसर पर लेखिका श्रीमती प्रवीण शर्मा भी मौजूद थीं।

सम्मान

प्रख्यात हिंदी कवि **श्री चंद्रकांत देवताले** को वर्ष 2012 का साहित्य अकादेमी पुरस्कार देने की घोषणा की गई है। श्री देवताले को उनके काव्य संग्रह 'पत्थर फेंक रहा हूँ' (कविता संग्रह) के लिए यह पुरस्कार दिया गया। विदित हो कि उनके संपादन में ट्रस्ट से मुक्तिबोध की गद्य रचनाएँ 'डबरे पर सूरज का बिंब' प्रकाशित है।

प्रख्यात ओड़िया कथाकार **सुश्री प्रतिभा राय** को वर्ष 2011 का ज्ञानपीठ पुरस्कार देने की घोषणा की गई है। यह अब तक का 47वाँ पुरस्कार है। विदित हो कि यह सम्मान किसी रचनाकार की आजीवन उपलब्धि के लिए प्रदान किया जाता है।

ग्वालियर कार्यक्रम

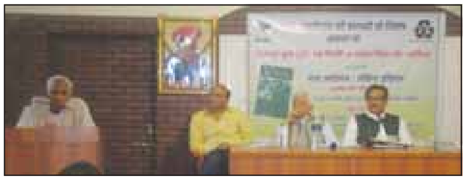

'गदर आंदोलन' पुस्तक का लोकार्पण

ग्वालियर के चैंबर्स ऑफ कॉमर्स हॉल, जयेंद्रगंज में 25 नवंबर, 2012 को नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा प्रकाशित *गदर आंदोलन : संक्षिप्त इतिहास* नामक पुस्तक का लोकार्पण किया गया। विदित हो कि पुस्तक के लेखक श्री हरीश के. पुरी एवं अनुवादक श्री प्रकाश दीक्षित हैं।

कार्यक्रम का प्रारंभ पुस्तकों द्वारा अतिथियों के स्वागत से हुआ और श्री अशोक कुमार पांडे ने नेशनल बुक ट्रस्ट, दखल विचार मंच की गतिविधियों, गदर आंदोलन के महत्व पर प्रकाश डाला। तदुपरांत पुस्तक लोकार्पण हुआ। लेखक श्री हरीश के. पुरी ने बताया कि किस तरह सन् 1960 में उन्हें कुछ 'गदरिये और देशभक्त' मिले और उन्हीं से बातचीत में मिले तथ्यों के आधार पर उन्होंने गदर आंदोलन पर शोध करना प्रारंभ किया। श्री पुरी ने गदर आंदोलन से जुड़े कई ऐसे पहलुओं को प्रस्तुत किया कि श्रोता भावुक हो गए। उन्होंने बताया कि जब पंजाब के कई बड़े जमींदार ब्रितानी हुकुमत की कर प्रणाली के चलते दाने-दाने को मोहताज हो गए तो वे पैसा कमाने के लिए अमेरिका, कनाडा गए। लेकिन जब वहाँ उनकी अस्मिता इस कारण से आहत होने लगी कि वे एक गुलाम देश से आए हैं तो उन्होंने जाति, धर्म से ऊपर उठकर देश के लिए मर-मिटने की ठान ली।

अनुवादक श्री प्रकाश दीक्षित ने कहा कि उन्होंने कई पुस्तकों को पढ़ा व अनुवाद किया है, लेकिन इस पुस्तक पर काम करना उनके लिए अनूठा अनुभव था। हर पन्ने पर हिंदुस्तान की आजादी की लड़ाई का शौर्य, संघर्ष, जीवट उभरकर सामने आता था। श्री दीक्षित ने इस शोधपूर्ण कार्य के लिए लेखक को बधाई दी। मुख्य अतिथि श्री पंकज सिंह ने अपने बी.बी.सी. लंदन प्रवास के दौरान वहाँ एक गदरी बाबा से मुलाकात और उनके इंटरव्यू को अपने जीवन की सबसे उल्लेखनीय घटनाओं में से एक बताया। श्री सिंह ने लेखक के शोध, उसे आम लोगों के अनुरूप प्रस्तुत करने तथा अनुवाद की तारीफ की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए ट्रस्ट में हिंदी संपादक श्री पंकज चतुर्वेदी ने जानकारी दी कि नेशनल बुक ट्रस्ट स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े ऐसे कई अल्प चर्चित प्रसंगों और व्यक्तियों पर कई पुस्तकों का प्रकाशन कर रहा है।

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह कार्यक्रम

इंदौर, मध्य प्रदेश

इंदौर में 16 से 19 नवंबर, 2012 तक नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा आयोजित राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह महोत्सव के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन एवं ट्रस्ट की पुस्तक *क्रिकेट अंपायर्स* का लोकार्पण किया गया। पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन नगर निगम के आयुक्त श्री राकेश सिंह ने किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री निवास राव, प्राचार्य चौइथराम स्कूल तथा अध्यक्ष, सहोदय समूह थे। श्री सिंह ने कहा कि पुस्तकें इंसान की मार्गदर्शन, मित्र और विकास का प्रतिमान होती हैं। श्री राव ने अँग्रेजी के अलावा भारतीय भाषाओं में पठन रुचि के विकास के लिए विशेष कदम उठाने के लिए अनुरोध किया।

यह प्रदर्शनी 20 नवंबर तक चली और इसमें ट्रस्ट की पचास हजार रुपये से अधिक कीमत की पुस्तकों की बिक्री हुई।

17 नवंबर को आयोजित कार्यक्रम में ट्रस्ट से प्रकाशित पुस्तक *क्रिकेट अंपायर्स* का लोकार्पण अजय जडेजा ने किया। इस अवसर पर बी.सी.सी.आई. के सचिव श्री संजय जगदाले, इंदौर यूनिवर्सिटी के पूर्व कुलपति श्री ए.ए. अब्बासी और दैनिक भास्कर के औरंगाबाद संस्करण के संपादक श्री अभिलाष खांडेकर ने अपने विचार व्यक्त किए। चूँकि यह दिन पुस्तक के लेखक श्री सूर्य प्रकाश चतुर्वेदी के 75वें जन्मदिन का भी था, सो, इसे नेशनल बुक ट्रस्ट की ओर से लेखक को जन्मदिन का तोहफा कहा गया।

18 नवंबर को ट्रस्ट से प्रकाशित दो पुस्तकों–*मध्यप्रदेश* और *चुटकीभर नमक : मीलों लंबी बागड* पर विमर्श का आयोजन किया गया। *चुटकीभर नमक : मीलों लंबी बागड* की समीक्षा करते हुए श्री उदयन वाजपेयी ने कहा कि यह पुस्तक मिसाल है कि लेखक को किस तरह खोजी, उद्यमी और शोधार्थी होना चाहिए। श्री वाजपेयी ने इस पुस्तक के बहाने भाषा, संस्कृति और पठन अभिरुचि पर विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर *मध्यप्रदेश* पुस्तक के लेखक व जानेमाने पत्रकार श्री शिवअनुराग पटेरिया ने

बताया कि किस तरह उन्होंने इस पुस्तक पर काम किया। पद्मश्री प्रख्यात पत्रकार श्री अभय छजलानी ने इस पुस्तक को प्रदेश के विकास के लिए आवश्यक दस्तावेज करार दिया।

19 नवंबर को प्रख्यात हिंदी लेखक श्री स्वयंप्रकाश की पुस्तक *प्यारे भाई रामसहाय* पर चर्चा के अवसर पर लेखक ने अपने उद्गार कुछ इस तरह व्यक्त किए : "मेरे जन्म स्थान इंदौर में मेरे बालपन के दिनों के अनुभव ही मेरे लेखन का आधार रहे हैं। मेरी रचनाओं में मेरे उन दिनों की स्मृतियाँ हर समय जीवंत रहती हैं।" इस पुस्तक

में स्वयंप्रकाश जी ने इंदौर में बीते अपने बचपन की कुछ घटनाओं को बच्चों के लिए प्रस्तुत किया है। इस पुस्तक का प्रकाशन नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया ने किया है। राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के अंतर्गत श्रीमध्य भारत हिंदी साहित्य समिति में चले पुस्तक उत्सव के दौरान यह आयोजन संपन्न हुआ। दिल्ली से आई जानी-मानी बाल साहित्य लेखिका श्रीमती कुसुमलता सिंह इस अवसर पर उपस्थित थीं। इस पुस्तक पर चर्चा करते हुए श्रीमती सिंह ने कहा कि 'प्यारे भाई रामसहाय' पचास के दशक के इंदौर के जीवन, संस्कृति, शिक्षा का जीवंत दस्तावेज है। इसकी भाषा, प्रस्तुति आदि सुदूर ग्रामीण अंचल के बच्चों को अपने खुद के जीवन में होने वाली घटनाओं की ही तरह महसूस होगी और बच्चे इस पुस्तक की प्रत्येक घटना में अपने को तलाशेंगे।

गुजराती साहित्य-कार्यक्रम

श्री दिल्ली गुजराती समाज, दिल्ली के सहयोग से एनबीटी द्वारा आयोजित राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह उत्सवों के एक भाग के रूप में 16-17 नवंबर, 2012 को दो दिवसीय गुजराती साहित्य-कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

दिल्ली की सिविल लाइन्स स्थित गुजराती स्कूल के सभागार में 17 नवंबर, 2012 को आयोजित पुस्तक लोकार्पण समारोह में शिक्षाविद् एवं सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता श्रीमती विद्याबेन शाह और जानेमाने विद्वान तथा गुजराती पाक्षिक पत्रिका 'निरीक्षक' के संपादक श्री प्रकाश एन. शाह ने एनबीटी द्वारा प्रकाशित गुजराती की *अमृतलाल शेठ* और *ए मैन्युअल ऑन डॉग ट्रेनिंग* शीर्षक पुस्तकों का लोकार्पण किया। इस अवसर पर *अमृतलाल शेठ* की लेखिका श्रीमती वर्षा दास और *ए मैन्युअल ऑन डॉग ट्रेनिंग* के लेखक डॉ. गौतम उन्नी ने भी दर्शकों को संबोधित किया।

लोकार्पण के पश्चात 'हमारे आज के जीवन में पठन का महत्व' विषय पर एक परिचर्चा सत्र का आयोजन किया गया। लेखक और प्राचार्य-निदेशक, एकेडमिक स्टाफ कॉलेज, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, डॉ. भद्रायु वच्छराजन्नी ने उक्त विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

आरंभ में नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने दर्शकों को प्रकाशन के अतिरिक्त ट्रस्ट की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी। श्री दिल्ली गुजराती समाज के अध्यक्ष श्री मोहित पारेख ने इस अवसर पर उपस्थित अतिथियों का स्वागत किया।

श्री लक्ष्मीनारायण ट्रस्ट द्वारा संचालित गुजराती स्कूल में 16 नवंबर, 2012 को बच्चों के लिए एक सृजनात्मक लेखन और चित्रकला कार्यशाला का आयोजन किया गया। विजेताओं को उपहारस्वरूप एनबीटी की पुस्तकें प्रदान की गईं।

इस अवसर पर एक पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया। इस दो दिवसीय कार्यक्रम का संयोजन एनबीटी के गुजराती संपादक श्री भाग्येंद्र बहादुरभाई पटेल ने किया।

असुरेश्वर, ओडिशा

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह समारोह के एक भाग के रूप में ओडिशा के असुरेश्वर में सुभद्रा महताब महाविद्यालय के सहयोग से महाविद्यालय-प्रांगण में 17 नवंबर, 2012 को नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा एक पुस्तक लोकार्पण समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का उद्घाटन करते हुए ओड़िया के प्रख्यात उपन्यासकार एवं कथाकार प्रो. शांतनु कुमार आचार्य ने छात्रों से पठन आदत बनाने का आह्वान किया और कहा कि वे किताबों से दोस्ती करें। उन्होंने ओडिशा एवं ओड़िया साहित्य के गौरवशाली इतिहास को भी याद किया और कहा कि युवाओं को इस बात पर गर्व होना चाहिए कि वे एक समृद्ध और महान साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं के वाहक हैं।

इस अवसर पर एक मूल ओड़िया पुस्तक *रवि पटनायक श्रेष्ठ गल्प* तथा ओड़िया में अनूदित *ट्विलाइट मार्क ऑफ द नोज रिंग, इला, बियॉन्ड द जाएंट, ड्रैगन सूनामी* तथा *जैनेंद्र कुमार की तीन बाल कहानियाँ* का लोकार्पण भी किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अध्यापक विश्वरंजन ने छात्रों को इतिहास के अनेक उदाहरण देकर बताया कि ऐसे व्यक्तित्व पुस्तकों से कितना प्यार करते थे और आह्वान किया कि वे भी पुस्तकों को अपने जीवन में सबसे अधिक महत्व दें। डॉक्टर एवं लेखक प्रो. नित्यानंद स्वैन ने कुछ बड़े लेखकों के पठन एवं पाठन की आदतों के बारे में बताया। इस अवसर पर *इला* के अनुवादक प्रो. संघमित्रा मिश्रा, मूल पुस्तक *रवि पटनायका श्रेष्ठ गल्प* के संकलनकर्ता डॉ. सत्यप्रिय महालिक तथा *बियॉन्ड द जाएंट* के अनुवादक डॉ. रमाकांत सिंह ने भी अपने विचार साझा किए। वक्ताओं ने दुरूह एवं सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों के युवाओं में पठन मानस के निर्माण हेतु नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा उठाए गए कदमों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. तरुण कुमार साहु ने धन्यवाद ज्ञापन किया। ट्रस्ट में ओड़िया भाषा संपादक डॉ. प्रमोद सर ने कार्यक्रम का समन्वय किया।

रायचूर, कर्नाटक

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह समारोह के एक भाग के रूप में रायचूर, कर्नाटक में 20 नवंबर, 2012 को एक पुस्तक लोकार्पण समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कन्नड़ भाषा में ट्रस्ट की राष्ट्रीय जीवनचरित पुस्तकमाला के अंतर्गत प्रकाशित *संतकवि शिशुनाळा शरीफ साहेब* (लेखक : डॉ. एन.एस. लक्ष्मीनारायण भट्टा) पुस्तक का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पुस्तक का लोकार्पण करते हुए प्रख्यात कन्नड़ लेखक श्री रमजान दरगा ने कहा, "शरीफ की कविताओं में व्यक्त मानवीय मूल्य आज के समय की जरूरत है।" उन्होंने मानवता के लिए विभिन्न संस्कृतियों का सम्मान करने के शरीफ के संदेश पर जोर दिया। प्रख्यात विद्वान डॉ. विक्रम विसाजी ने शरीफ के लेखन में धर्मनिरपेक्ष मूल्यों के बारे में अपने विचार रखे। प्रख्यात लेखक श्री वीरहनुमान ने उपस्थित पुस्तकप्रेमियों को पुस्तक के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ लेखक श्री जम्बण्णा अमरचिंता ने की। कार्यक्रम के समापन समय में स्थानीय गायक श्री बी. चिदानन्दप्पा गवाई रारावी ने शरीफ की कविताओं को गाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

इस अवसर पर ट्रस्ट की पुस्तकों की प्रदर्शनी-सह-विक्रय भी हुई। कार्यक्रम के आयोजन में तालुक कन्नड़ साहित्य परिषत, रायचूर का भी सहयोग रहा।

कार्यक्रम का संयोजन ट्रस्ट के कन्नड़ संपदक श्री एच. नागराजप्पा ने किया।

कश्मीरी सलाहकार समिति की बैठक

ट्रस्ट-अध्यक्ष श्री ए. सेतुमाधवन की अध्यक्षता में नेशनल बुक ट्रस्ट मुख्यालय, नई दिल्ली में 12 दिसंबर, 2012 को कश्मीरी भाषा सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन हुआ। बैठक में उपस्थित अन्य सदस्य थे—डॉ. अजीज हजीनी, श्रीमती रुखसाना जबीन, श्री गुलाम नबी आतिश, श्री बी.एन. बेताब, श्री एम.के. रैना, श्री पियारे हताश, डॉ. अब्दुल मजीद बाबा तथा डॉ. रतनलाल शांत। ट्रस्ट-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर, संयुक्त निदेशक (प्रशा.) श्रीमती फरीदा एम. नाईक, मुख्य संपादक एवं संयुक्त निदेशक श्री बदलेव सिंह 'बद्दन' तथा ट्रस्ट में उर्दू भाषा संपादक डॉ. शम्स इकबाल भी बैठक में उपस्थित थे।

तमिल सलाहकार समिति की बैठक

22 दिसंबर, 2012 को सेंट्रल लाइब्रेरी बिल्डिंग, आई.आई.टी. चेन्नई कैम्पस, चेन्नई के कांफ्रेंस हॉल में ट्रस्ट की तमिल सलाहकार समिति की बैठक संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता ट्रस्ट-अध्यक्ष श्री ए. सेतुमाधवन ने की।

बैठक में शामिल सलाहकार समिति के अन्य सदस्य थे—श्री एस. रामकृष्णन, श्री सु. वेंकटीशन, श्रीमती बामा, डॉ. आई. मुथैया, डॉ. थिरुमलाई, डॉ. ए.आर. वेंकटचलापति, श्री इरा. नटराजन, डॉ. अय्यमपेरुमल, श्री कुरीनजीवेलन, डॉ. वी. इराइ अन्बु आईएएस, थिरू. टी उदय चंद्रन आईएएस, श्रीमती कविता मुरलीधरन, डॉ. मरिअप्पन, श्री एस.एस. शाजहां। बैठक में ट्रस्ट-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर, मुख्य संपादक एवं संयुक्त निदेशक डॉ. बलदेव सिंह बद्दन तथा तमिल भाषा संपादक श्री मदन राज भी उपस्थित थे।

नववर्ष सद्भावना सम्मिलन

नववर्ष 2013 के अवसर पर ट्रस्ट के दिल्ली स्थित मुख्यालय परिसर में नववर्ष सद्भावना सम्मिलन कार्यक्रम संपन्न हुआ। पहली जनवरी को आयोजित इस कार्यक्रम में ट्रस्ट-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने आगामी नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला के मद्देनजर अपने संबोधन को उसी पर केंद्रित करते हुए कहा कि विश्व के इस प्रतिष्ठित आयोजन को सफल बनाना हम सब की सामूहिक जिम्मेवारी है। उन्होंने सभी ट्रस्टकर्मियों से आह्वान किया कि इस आयोजन को सफल बनाने में अपना शत-प्रतिशत योगदान दें।

जब पुस्तक मेला घूमेंगे
तो चाँद-सितारे छू लेंगे।

पुस्तक देती है दस्तक
आओ पुस्तक मेला तक।

R.N.I. No. 64445/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4077/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 23/2012-14
Mailing date 15/16 same month
Date of publication 08/12/2012

चिट्ठीघर

हर माह ट्रस्ट की पुस्तक संबंधी गतिविधियों एवं आयोजनों की जानकारी देकर आप देशभर में एक पुस्तक संस्कृति के निर्माण में महती योगदान दे रहे है। देशभर के अनेक क्षेत्र में विभिन्न भाषाओं में पुस्तकें उपलब्ध कराने वाले एनबीटी पर किसे गर्व न होगा! पठन-पाठन का यह आंदोलन भारत को एक बौद्धिक राष्ट्र सिद्ध करेगा यह विश्वास है। मुझे विश्वास है इस बार फरवरी, 2013 का नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला एक नया इतिहास रचेगा। **मुकुंद कौशल,** पद्मनाभपुर, दुर्ग, छत्तीसगढ़

नेशनल बुक ट्रस्ट

आपको नववर्ष 2013 की हार्दिक शुभकामनाएँ देता है

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2013 में आपका स्वागत है

सेवानिवृत्ति

श्री सुरिंदर सिंह 33 वर्षों तक नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया में सेवारत रहने के पश्चात 31 दिसंबर, 2012 को प्रवर श्रेणी लिपिक (यू.डी.सी.) के पद से सेवानिवृत्त हो गए। श्री सिंह ने 1980 में चतुर्थ वर्गीय कर्मचारी के रूप में ट्रस्ट में सेवारंभ किया था। 1991 में वे अवर श्रेणी लिपिक तथा 2011 में प्रवर श्रेणी लिपिक के रूप में प्रोन्नत हुए। अपनी लंबी सेवा-अवधि में उन्होंने ट्रस्ट के अनेक विभागों, यथा—प्रशासन, प्रदर्शनी, लेखा, संपादकीय, विक्रय स्टोर, विक्रय प्रदर्शनी में कार्य किया। ट्रस्ट के सभी सहयोगी श्री सिंह के अच्छे स्वास्थ्य एवं दीर्घायु होने की कामना करते हैं।

नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद* भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया का मुख पत्र है।

इस पत्रिका के आलेखों में व्यक्त विचारों से ट्रस्ट की सहमति का होना आवश्यक नहीं है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**

कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**

उत्पादन सहयोग : **नरेन्द्र कुमार**

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः nbtindia@nbtindia.org.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद*** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक बलदेव सिंह 'बद्दन'।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार के सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070